ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

आशा उम्मीद की एक किरण

बसुन्धरा कुमारी
शोध छात्रा,
अर्थशास्त्र विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखण्ड

सारांश

भारत सरकार द्वारा ग्रामीण जनसंख्या विशेषकर निम्न अथवा सीमांत वर्ग के लोगों के स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 2005 में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (National Rural Health Mission. NRHM) की स्थापना की गई। यह योजना एक ओर लम्बवत स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम तथा दूसरी ओर स्वास्थ्य के निर्धारक तत्व जैसे स्वच्छता, पोषण एवं शुद्ध पेयजल के बीच समन्वय की रणनीति है। एन. आर. एच. एम. का मुख्य उद्देश्य देश के प्रत्येक गाँव में प्रशिक्षित महिला कार्यकर्ता 'सहिया' (आशा) के माध्यम से स्वास्थ्य सुविधाऐं उपलब्ध कराई जाय। जिनके माध्यम से समुदाय में स्वास्थ्य एवं संबंधित सेवाओं को गतिशील करने का प्रयास किया जाता है। ये सेवाऐं ग्रामीण प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं उपकेन्द्रो में उपलब्ध होती है।

मुख्य शब्द : NRHM, ग्रामीण स्वच्छता, ग्रामीण महिला का स्वास्थ्य, सहिया, स्वास्थ्य केन्द्र, बाल स्वास्थ्य।

प्रस्तावना

ग्रामीण महिलाओं को अनेक बिन्दुओं पर जैसे जन्म संबंधी तैयारी, सुरक्षित प्रसव, दो बच्चों का महत्व, महिला व पुरूष नसबंदी के फायदे, कुपोषण के दुष्परिणाम आदि के संबंध में उचित परामर्श भी सहिया देती है। ग्रामीण के बीच की प्रथम कडी स्वास्थ्य उपकेन्द्र होता है। प्रत्येक उपकेन्द्र की व्यवस्था के लिए Auxiliary Nurse Medical (ANM), एक पुरूष स्वास्थ्य कार्यकर्ता तथा एक महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता (LHW) होते है। प्रत्येक उपकेन्द्र को 5,000 की बड़ी जनसंख्या की स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। ANM अत्यधिक कार्यभार की समस्या से परेशान रहती थीं। इसलिए वे अपने सेवाओं का निष्पादन सही ढंग से नहीं कर पाते हैं। अतः उनकी कार्यों में सहायता कर उनके कार्यभार को कम करने के लिए 2005 से 2006 के बीच में अधिकृत सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता (आशा) नियुक्ति की जाने लगी। जिनका मुख्य उद्देश्य ANM के स्वास्थ्य सेवाओं को प्रदान करने की कमी को पुरा करना होता है।

विषय के चयन का उद्देश्य

1. आशा ग्रामीण महिलाओं के लिए एक उम्मीद की किरण।
2. ग्रामीण स्वच्छता एवं स्वास्थ्य में आशा की महत्वपूर्ण भूमिका।
3. मातृ–मृत्यु दर में दिन–प्रतिदिन सुधार एवं शिशु मृत्यु दर में गिरावट आना।
4. एन.आर.एच.एम. के उद्देश्यों में आषा की जिम्मेदारियाँ।
5. ए.आर.एच.एम. एवं ग्रामीण स्वास्थ्य समस्या के बीच की कड़ी आशा।
6. आषा की जिम्मेदारी और बढ़ाई जाय।
7. प्रोत्साहन राशि सम्मान जनक मिलना चाहिए।

झारखण्ड में आशा

झारखण्ड में ''आशा'' को ''सहिया'' कहा जाता है क्योंकि सहिया को स्थानीय भाषा में सहयोग करने वाला माना जाता है। सहिया स्वास्थ्य संबंधित सेवाओं को गाँव के अन्तिम महिला तक उपलब्ध कराती है। झारखण्ड सरकार ने इसका प्रारम्भ 2004 से किया है। जिसका मुख्य उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाओं को उपलब्ध कराकर महिलाओं को सशक्तिकरण प्रदान किया जाये। इसके अन्तर्गत NGO के द्वारा भी कार्य स्थल तक पहुँचकर निरीक्षण किया जाता है। इस कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह हैं कि ग्रामीण स्वास्थ्य समिति इस कार्यक्रम के केन्द्र में रीड़ की हड्डी की तरह कार्य करते हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य समिति के अन्तर्गत गाँव के अन्तर्गत नेताओं एवं अन्य इनके सदस्य भी होते हैं जिन्हें सहिया का चयन ग्रामीण स्तर पर करने की जिम्मेदारी होती है। इसलिए इसे सामाजिक सशक्तीकरण का उत्कृष्ठ उदाहरण माना जाता है।

आशा की भूमिका

''आशा'' का कुछ महत्वपूर्ण भूमिका एवं जिम्मेदारियाँ, एन. आर. एच. एम. द्वारा सुनिश्चित इस प्रकार हैः–

1. गर्भवती महिलाओं का EARLY पंजीकरण।
2. बी. पी. एल. अथव ए.पी.एल. का प्रमाणपत्र सुनिश्चित करना ।
3. प्रसवपूर्व चार जाँच करवाना तथा उसके घर पर जा कर परामर्श देना।
4. गर्भावस्था के दौरान जोखिमों को पता लगाकर तथा उसका समाधान करने का उपाय बताना।
5. महिलाओं को प्रसवकालिन तैयारियाँ जैसे संक्रमण नियंत्रण RTI आदि से संबंधित जानकारी प्रदान करना।
6. गर्भवती महिलाओं को पूर्व निर्धारित संस्था तक पहुँचाना।
7. स्वास्थ्य दिवस को आयोजित करना।
8. पंजीयों को Up to Date करना।

आशा का महत्त्व (Importance of Asha)

ग्रामीण क्षेत्रों में कुपोषण एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याऐ मानवीय संसाधन के विकास में बहुत बड़ा अवरोधक का कार्य करती है जो अर्थव्यवस्था का विकास को मार्ग के अवरूद्ध कर देता है। इसके लिए राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य योजना के माध्यम से अधिकृत सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता की नियुक्ति सीधे तौर पर की जाती हैं, जिसका प्रमुख कार्य NRHM के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता प्रदान करना।

सहिया ग्रामीण स्वास्थ्य संबंधी समस्याऐं एवं बढ़ती प्रजननशीलता पर नियंत्रण करके सामाजिक विकास एवं मानव संसाधन को मजबूत बना कर भारत के अर्थव्यवस्था के विकास के मार्ग को प्रशस्त कर सकती है। चूकि महिलाएँ लम्बी उम्र तक स्वस्थ एवं निरोग रहेगी तो अधिक उम्र तक कार्य करेगी। बीमारी में इलाज के खर्च बचेंगे, बच्चों की संख्या कम होगी, उन्हें अच्छा परवरिश, शिक्षा, संस्कार, नैतिकता, योग्य एवं स्वालंबी बना पाऐगी। जिससे हमारा मानवीय संसाधन की उत्पादकता में वृद्धि किया जा सकेगा। ऐसा प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है कि स्वस्थ नागरिक ही उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते है। लोगों का स्वास्थ्य जितना मजबूत रहेगा वे उतना कार्य कर सकेंगें तथा उनके स्तर का प्रशिक्षण एवं तकनीकी शिक्षा प्रदान की जा सकेगी। दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार नियोजन के महत्त्व एवं प्रशिक्षण, तरीके, उपकरण तथा महत्त्वपूर्ण दवाओं को सहिया के माध्यम से दिया जाय तो प्रजनन दर को आसानी से घटाया जा सकता है।

अतः ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य, प्रजननशीलता, स्वच्छता तथा बीमारी से बचने के उपाय की जानकारी एवं सुविधा प्रत्येक गाँव के अन्तिम द्वार तक पहुँचाया जाना अति आवश्यक है।

आशा का दायित्व (Responsibilities of ASHA)

1. लोगों को स्वस्थ्य रहने का सुझाव एवं स्वास्थ्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देना । जैसे–

आशा
ASHA

- A स्वच्छता (Sanitation)
- B पोषण (Nutrition)
- C अच्छी आदते (Good Habits)
- D स्वस्थ्य रहन–सहन (Healthy Living Stander)
- E परिवार कल्याण की सेवाओं के उपयोग के बारे में

2. आशा गाँव में – स्वास्थ्य उपकेन्द्र तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में उपलब्ध समस्त स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारियाँ देती है। जैसे–

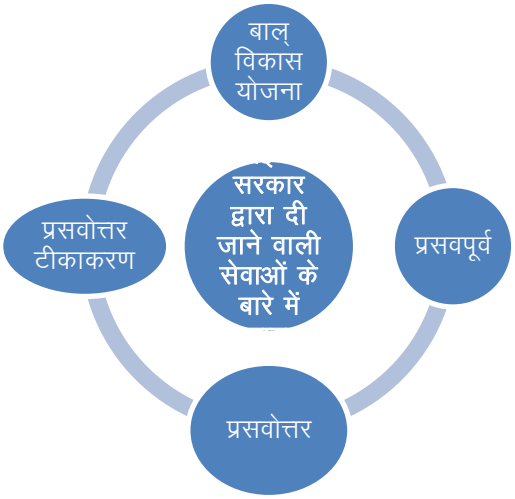

3. प्रत्येक व्यक्ति को दी जाने वाली अनिवार्य सुविधाओं के लिए ''डिपो होल्डर'' का कार्य करेगी। जैसे–
1. ORL
2. आयरन फॉलिक ऐसिड गोलियों का वितरण।
3. क्लोरोक्वीन क्रिस्पो जल डिलीवरी किट।
4. गर्भ निरोधक खाने वाली गोलियाँ कण्डोम आदि।
5. इसे रखने के लिए एक दवा का कीट आशा को दी जाती है।
6. आशा ग्राम पंचायत की ग्राम स्वास्थ्य समिति की ग्रामीण स्वास्थ्य योजना बनाती है।
7. प्रसव की तैयारी, स्तनपान, अतिरिक्त आहार, टीकाकरण, परिवार नियोजन के तरीके व अन्य संक्रमण की रोकथाम के बारे में सलाह देना।
8. गर्भवती महिलाओं को संक्रमण होने पर भर्ती कराना, उपचार कराना एवं भोजन की व्यवस्था।
9. शिशुओं में टीकाकरण एवं छः जानलेवा बीमारियों के बचाव के बारे में सलाह देगी।
10. बच्चों को संक्रमण होने पर तुरन्त अस्पताल ले जाना।
11. छोटी–मोटी बीमारियों में प्राथमिक चिकित्सा सेवा देना।
12. राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण व डॉट्स प्रोग्राम में अल्पावधि उपचार की दवाइयाँ प्रदान करेंगी।

आशा की कार्य प्रणाली (Work Process of ASHA)

आशा को प्रत्येक दिन चार Working घण्टे के हिसाब से सप्ताह में कम–से–कम 4 दिन ग्रामीणों के घरों पर जाकर यह जानकारी प्राप्त करती है कि गाँव में स्वास्थ्य सेवाओं का किस प्रकार विस्तार किया जा सकता है। वैसे घरों में माह में कम से कम एक बार जाना आवश्यक होता है, जहाँ महिलाऐं गर्भवती हो नवजात शिशु दो वर्षों से कम उम्र के बच्चे हो अथवा कुपोषित बच्चे हो। ग्रामीण स्वास्थ्य एवं कुपोषण दिवस पर ग्रामीण की उपस्थिति में वृद्धि करने का प्रयास करती है। प्रारंभिक स्वास्थ्य के मासिक बैठक में भाग लेकर ग्रामीण स्तरीय बैठक का भी आयोजन करती है जिसमें सामान्य लोगों को स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक जानकारी देती है तथा उनके द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों का अभिलेख भी रखती है।

आशा की चयन एव नियुक्ति प्रक्रिया (Selection and Joining Process of ASHA)

सामान्यतः आशा का चयन प्रत्येक एक हजार जनसंख्या पर किया जाता है। परन्तु झारखण्ड में प्रत्येक गाँव में दो सहिया या गाँव अधिक बड़ा है तो दो से अधिक। आशा की नियुक्ति हेतु कुछ आवश्यक शर्तें होती है जिसे सर्वप्रथम देखा जाता है। जैसे–

1. उसे उस गाँव का निवासी होना चाहिए।
2. उसकी उम्र 25 से 45 वर्ष तक होना चाहिए।
3. कौशलता होनी चाहिए।
4. नेतृत्व की गुण एवं समूह कार्य की क्षमता हो।
5. शिक्षित होनी चाहिए।
6. निम्नतम योग्यता अष्टम वर्ग पास हो।
7. शैक्षिक योग्यता उपलब्ध नहीं होने पर इसमें छूट दी जा सकती है।

अतः इनका चयन हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायत के माध्यम से विज्ञापन दिया जाता है। इच्छुक उम्मीदवार को ग्राम समिति के किसी सदस्य को आवेदन देना पड़ता हैं इनके चयन में जिला स्वास्थ्य एवं समाज कल्याण संस्था, नोडल पदाधकारी, एक वरीय स्वास्थ्य पदाधिकरी, प्रखण्ड स्वास्थ्य पदाधिकारी, ग्राम पंचायत के विभिन्न समितियों से चार–पाँच सदस्य की स्थापना ग्राम विद्यालय के शिक्षक, कार्यरत आशा आदि के निगरानी एवं व्यवस्था की प्रक्रिया में चयन कर नियुक्ति की जाती है।

आशा का प्रशिक्षण (Training of ASHA)

आशा अपने दायित्वों एवं कार्यों को सफलता पूर्वक निभाएँ इसके लिए उसका प्रशिक्षित होना अतिआवश्यक है। उनके प्रशिक्षण में निम्न महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक बिन्दुओं को शामिल किया जाता है–

1. कार्य को एकाग्रता से समझाना ।
2. कौशल का विकास कराना।
3. आत्मविश्वास का प्रशिक्षण देना।
4. ग्रामीण महिलाओं के साथ सम्पर्क साधने के लिए उत्तम व्यवहार।
5. उत्साह बनाये रखना।
6. कार्य से संबंधित समस्याओं से निपटने का प्रशिक्षण देना।
7. इसके साथ–साथ आशा को प्रत्येक महीने दो दिनों का प्रशिक्षण विभिन्न स्तरों पर दिया जाता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

आशा के माध्यम से सरकार ग्रामीण जनसंख्या के प्रत्येक घर एवं प्रत्येक महिलाओं के साथ संबंध स्थापित कर सकती है। ग्रामीणों के साथ पैठ बना कर उनके स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन से सम्बन्धित कठिनाइयों का संकलन कर, उन्हे दूर करने का उपाय ढूंढ़ कर एन. आर. एच. एम. के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकती है। इसके लिए आशा को अपने कार्यों में प्रोत्साहित एवं गतिशीलकर, ग्रामीण विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है। जो देश की आर्थिक विकास में सबसे बड़ी समस्या है।

सुझाव (Suggation)

1. सहिया के मानदेय भत्ता में वृद्धि होना चाहिए, जितना मजदूर को मिलता हैं।
2. इनके कार्य दिवस को बढ़ावा जाना चाहिए।
3. निर्धारित कार्य के अलावा अन्य जिम्मेदारियाँ सौंपी जानी चाहिए। जैसेः सड़क, पानी, विद्यालय एवं बेरोजगार महिलाओं को कौशल विकास योजना से जोड़ना आदि।
4. वर्तमान कार्यों की समीक्षा ली जानी चाहिए।
5. प्रत्येक अगले सप्ताह के कार्यसूची को सौपनी चाहिए।
6. वर्तमान समस्या के निराकरण के उपाय भी पूछना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *www.Rural-Health-Care-Rural-India*
2. *Child Health Nursing-Medico Refresger Publication, 2017*
3. *General Nursing and Midwifery, 1820-1910, Agra, Publications.*
4. *परामर्श एवं निर्देशन–2013*
5. *शर्मा0 आर0 एस0 अग्रवाल पुस्तक महल*
6. *Www.JHRM.Jharkhand.Gov.In*
7. *Www.NRHM.India.Gov.In*